सं श्रो. वि./यमुना/83-85/44616.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. कार्यकारी श्रिभयन्ता, डब्लयू वाई. सी एच ई. शोजैंकट एच एस ई. बी., यमुनानगर, के श्रीमिक श्री छंगू राम तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रंब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिविनियम, 1947, की बारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई मिन्तियों का प्रयोग करते हुए, ह्रियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिविसूचना सं० 3 (44) 84—3—श्रम, दिनांक 18 ग्रप्नैंल, 1984, द्वारा उक्त ग्रिवियम की धारा 7 के ग्रिवीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिणंय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या जल से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री छंगू राम की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० घो०वि०/रोहतक/22-85/44622.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. (1) निदेशक, पंचायत, हरियाणा, सैक्टर 9, चण्डीगढ़, (2) सरपंच, ग्राम पंचायत साम्पला; (3) खण्ड विकास तथा पंचायत ग्रधिकारी, साम्पला; (4) कार्यकारी ग्रिमियन्ता, पंचायत, समिति, रोहतक, के श्रमिक श्री सूरजभान तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीधोगिक विवाद है;

धीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद श्रिश्तियम, 1947, की घारा 10की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की नई शवितयों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं. 9641-1-श्रम/78/32573, दिकांक 6 नवस्वर, 1970, के साथ गठित सरकारी श्रिधसूचना की, घारा 7 के श्रधीन गठित श्रम भ्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्भिक्त नीचे लिखा मामला त्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन भास में देने हेतु निविष्ट करते हैं, को कि उसत प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है, या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :—

क्या की सुरज भान की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहृत का ह्कवार है ?

संबच्ची विविध्यान निर्मा के सामित के स्वाप्य के सामित के

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा अदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूजना मं० 3(44)84-3-अम, दिवांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उकत ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित अम न्यायालय, अम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास से देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमिक के बीच था तो विवादग्रस्त मामला है या उससे सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :— १ कि

क्या श्री जगदीश चन्द्र की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

## दिनांक 13 नवस्वर, 185

सं. भ्रो.वि./जी.जी.एन./93-85/45831.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. जे० बीठ पेपर मिल भाठ लिठ, धारहेड़ा गुड़गांवा, के श्रमिक श्री राम किशन शर्मा तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इस के बाद लिखित भामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इस लिए, अब, श्रीशोगिक विवाद श्रधिनियम, 1947, की धारा 10की उपधारा (1) के खण्ड (गं) द्वारा प्रदान की गई शिक्त खीं का अयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, विमांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए श्रधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त श्रधिनियम की बारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादपस्त या उससे सुसंगत था उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला श्रायनिर्णय एवं पंजाद तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच आप तो विवादपस्त मामला है आ विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या थी राम किशन शर्मा की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का ह्रादार है ?